❍ 19 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *"हम बाबा के साथ खा रहे हैं" - भोजन करते समय यह स्मृति रही ?*

➢➢ *कमल फूल समान पवित्र जीवन जीया ?*

➢➢ *ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचुरल नेचर बनाया ?*

➢➢ *डबल लाइट होकर रहे ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अन्त समय में प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे, परन्तु विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद आनर होगी जो सब बातें पास हो जायेंगी* लेकिन वह ब्रह्मा बाप के समान पास विद आनर का सबूत देगी।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं प्यूरिटी की रोयल्टी में रहने वाली ब्राह्मण आत्मा हूँ"*

〰✧ सभी ब्राह्मण जीवन की विशेषता वा फाउन्डेशन को जानते हो? क्या है? (प्यूरिटी) यह पक्का है कि प्यूरिटी ही फाउन्डेशन है? तो सभी पक्के ब्राह्मण हैं ना! प्यूरिटी की रोयल्टी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। जैसे कोई रॉयल फैमिली का बच्चा होगा तो उसके चेहरे से चलन से मालूम पड़ता है कि यह कोई रॉयल कुल का है। *ऐसे ब्राह्मण जीवन की परख प्यूरिटी की झलक से ही होती है। और चेहरे वा चलन से प्यूरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी प्यूरिटी हो। संकल्प में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो।* तो ऐसे है या कभी संकल्प में थोड़ा सा प्रभाव पड़ता है?

〰✧ *क्योंकि पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत नहीं। लेकिन प्यूरिटी अर्थात् किसी भी विकार अर्थात् अशुद्धि का प्रभाव न हो। तो फाउन्डेशन पक्का है या कभी कभी क्रोध को छुट्टी दे देते हो? बाल बच्चा आ जाता या अंश और वंश सब खत्म।* क्या समझते हो? माताओं में मोह आता है? बॉडी कान्सेसनेस की अटैचमेंट है? कोई विकार का अंश मात्र भी नहीं। क्योंकि बड़ों से तो मोह वा लगाव जल्दी निकल जाता है, लेकिन छोटों-छोटों से थोड़ा ज्यादा होता है।

〰✧ जैसे लौकिक संबंध में भी बच्चों से इतना प्यार नहीं होगा जितना पोत्रों और धोत्रों से होता है। ऐसे विकारों के भी ग्रेट चिल्ड्रेन से प्यार तो नहीं है? फाउन्डेशन प्यरिटी है इसलिए इस फाडन्डेशन के ऊपर सदा ही अटेन्शन रहे।

सबका लक्ष्य बहुत अच्छा है। तो जैसे लक्ष्य है वैसे ही लक्षण स्वयं को भी अनुभव हों और दूसरों को भी अनुभव हो। क्योंकि अनेक अपवित्र आत्माओंके बीच में आप पवित्र आत्मायें बहुत थोड़े हो। तो थोड़ी सी पवित्र आत्माओंको अपवित्रता को खत्म करना है। तो कितनी पावर चाहिए! तो सदा चेक करो कि अपवित्रता का अंश मात्र भी न हो। क्योंकि आपके जड़ चित्रों का भी सदा ही निर्विकारी कहकर गायन करते हैं। यह किसकी महिमा करते हैं? आपकी है या भारतवासियों की है? तो प्रैक्टिकल चेतन में बने हैं तब तो महिमा हो रही है। यह पक्का निश्चय है ना कि यह हम ही हैं! *तो ब्राह्मण अर्थात् प्यूरिटी की रोयल्टी में रहने वाले। प्यूरिटी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। हिम्मत रखकर आगे बढ़ रहे हो और और भी आगे से आगे बढ़ना ही है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ *समाने की शक्ति है ना या विस्तार करने की शक्ति ज्यादा है?* कई ऐसे कहते हैं ना - कि जब याद में बैठते हैं तो और-और संकल्प बहुत चलते हैं, इसको क्या कहेंगे? समाने की शक्ति कम और विस्तार करने की शक्ति ज्यादा। लेकिन *दोनों शक्ति चाहिए।*

〰✧ *जब चाहे, जैसे चाहे,* विस्तार में आने चाहे विस्तार में आयें और

समेटना चाहे तो समाने की शक्ति *सेकण्ड में यूज कर सकें, इसको कहते हैं - 'मास्टर सर्वशक्तिवान'।* तो इतनी शक्ति है या ऑर्डर करो समेटने की शक्ति को और काम करे विस्तार करने की शक्ति! स्टॉप कहा और स्टॉप हो जाए।

〰✧ फुल ब्रेक लगे, ढीली ब्रेक नहीं। अगर ब्रेक ढीली होती है तो लगाते हैं यहाँ और लगेगी कहाँ? तो ब्रेक पॉवरफुल हो। कन्ट्रोलिंग पॉवर हो। चेक करो - कितने समय के बाद ब्रेक लगता है? 5 मिनट के बाद या 10 मिनट के बाद। फल *स्टॉप तो सेकण्ड में लगना चाहिए* ना! अगर सेकण्ड के सिवाए *ज्यादा समय लग जाता है तो समाने की शक्ति कमजोर है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ औरों को ज्ञान देते हो ना - 'मैं' शब्द ही उड़ाने वाला है, मै शब्द ही नीचे लाने वाला। *'मैं' कहने से ओरीजिनल निराकार स्वरूप याद आ जाये। ये नैचुरल हो जाये तो यह पहला पाठ सहज है ना। तो इसी को चेक करो, आदत डालो - मैं सोचा और निराकारी स्वरूप स्मृति में आ जाये।* कितनी बार मैं शब्द कहते हो। मैंने यह कहा, मैं यह करूंगी, मैं यह सोचती हूँ. .। *अनेक बार 'मैं' शब्द यूज़ करते हो। तो सहज विधि यह है निराकारी व आकारी बनने की। जब भी मैं शब्द यूज़ करो फौरन अपना निराकारी ओरीजिनल स्वरूप सामने आये।* यह मश्किल है व सहज है। *फिर तो लक्ष्य और लक्षण समान हुआ ही पड़ा है।*

क्योंकि मैं शब्द ही देह-अहंकार मे लाता है और अगर मैं निराकारी आत्मा हूँ ये स्मृति में लायेंगे तो यह मैं शब्द ही देह-भान से परे ले जायेगा।

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- भगवान से फिर से राजाई के लिए पढ़ाई पढ़कर,अपना एम् ऑब्जेक्ट सदा याद रखना"*

➳ _ ➳ मधुबन प्रांगण में डायमण्ड हॉल में अपने खुबसूरत लक्ष्य को निहारती मै आत्मा मन्त्रमुग्ध हो जाती हूँ... और मीठे बाबा की याद में गहरे डूब जाती हूँ... और अगले ही पल दादी गुलजार के तन में विराजित मीठे बाबा को पाकर... अपने महान भाग्य पर मुस्कराती हूँ... मीठे बाबा मुझ आत्मा पर ज्ञान रत्नों की बरसात कर मुझे महा धनवान् बना रहे है... और मै आत्मा *भगवान को यूँ पिता, टीचर, सतगुरु रूप में पाकर भाव विभोर हो जाती हूँ.*.. ज्ञान धन से लबालब मै आत्मा, अपने देवताई लक्ष्य को सदा स्मर्ति में लिए... मीठे बाबा के हाथो में अपना हाथ देकर... सदा के लिए निश्चिन्त हो मुस्कराती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने ज्ञान रत्नों की बौछार मुझ आत्मा पर कर सम्पन्न बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *अपने प्यारे बच्चों को फिर से शहंशाह

बनाने के लिए, भगवान पिता बनकर. अथाह खजानो और सुखो को अपनी हथेली पर सजाकर लाया है.*.. इस ईश्वरीय दौलत से सम्पन्न हो, देवताई सुखो में मुस्कराओ... अपना सम्पन्न स्वरूप देवताई लक्ष्य, सदा याद रख निरन्तर आगे बढ़ो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से यूँ ज्ञान धन से मालामाल होकर, कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा... आपने मुझ आत्मा को अपनी गोद में बिठाकर, ज्ञान धन से भरपूर किया है... *भगवान को टीचर रूप में पाने वाली, मै संसार की सबसे भाग्यशाली आत्मा हूँ... जिसे ईश्वर पिता अपने हाथो से देवताई स्वरूप में ढाल रहा है.*.. यह कितना प्यारा मेरा भाग्य है..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को देवताई लक्ष्य का नशा दिलाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... *संगम के वरदानी समय पर, ईश्वर पिता से देवताई अमीरी से, भरपूर हो रहे हो.*.. इस मीठे भाग्य के नशे में हर पल झूमते रहो... मीठे बाबा से फिर से राजयोग सीख, देवताई सौंदर्य और विश्व की राजाई पा रहे हो... अपने लक्ष्य को सदा स्मर्ति में रख ईश्वरीय यादो में खोये रहो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से बेपनाह सुख और दौलत पाकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपकी यादो की बाँहों में, खुबसूरत देवताई लक्ष्य पाकर, मनुष्य से देवतुल्य बन रही हूँ..*. इस समूर्ण विश्व धरा पर राज्य भाग्य पा रही हूँ... प्यारे बाबा आपसे पुनः राजयोग सीख, अपनी खोयी शक्तियाँ और गुणो के खजाने से पुनः भर रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को अपने प्यार और वरदानों से भरपूर करते हुए कहते है :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता की प्यार भरी छत्रछाया में बैठकर,पढ़ाई पढ़कर, सहज ही देवताई लक्ष्य को बाँहों में पा लो... *घनेरे सुखो की बहारो में प्रेम, शांति और आनन्द के झूलो में खिलखिलाओ.*..मीठे बाबा के सारे खजानो के अधिकारी बन, विश्व की बादशाही को पाने वाले महान भाग्यवान

बनकर मुस्कराओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को असीम प्यार से निहारते और गले लगाते हुए कहती हूँ :-* "सच्चे साथी बाबा मेरे... मै आत्मा आपको पाकर धन्य धन्य हो गयी हूँ... आपकी यादो में गुणवान, शक्तिवान बन, अपने खोये अस्तित्व को पुनः पा रही हूँ... *सच्चे सुख, शांति और प्रेम की दुनिया की ओर रुख कर रही हूँ... और सदा की मालामाल हो रही हूँ.*.."मीठे बाबा की बाँहों में अथाह ज्ञान रत्नों को पाकर मै आत्मा... अपने स्थूल वतन में लौट आयी...

———————————————

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- स्वदर्शन चक्र फिराते रहना है*"

➳ _ ➳ स्वदर्शन चक्रधारी बन अपने 84 जन्मो के भिन्न - भिन्न स्वरूपों का गहराई से अनुभव करने के लिए मैं स्वयं को अशरीरी स्थिति में स्थित करती हूँ। *इस स्थिति में स्थित होते ही मैं स्वयं को विदेही, निराकार और मास्टर बीज रुप स्थिति में अपने शिव पिता परमात्मा के सामने परम धाम में देख रही हूँ*। कोई संकल्प कोई विचार मेरे मन में नही है। निर्संकल्प अवस्था। बस बाबा और मैं। *बीज रुप बाप के सामने मैं मास्टर बीज रुप आत्मा डेड साइलेंस की स्थिति का स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ। कितना निराला अनुभव है। कितना अतीन्द्रिय सुख समाया है इस अवस्था में*।

➳ _ ➳ यही मेरा संपूर्ण अनादि स्वरुप है। मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं देख रही हूँ अपने अनादि सतोप्रधान स्वरूप को जो बहुत सुंदर, बहुत आकर्षक और बहुत ही प्यारा है। *बीजरूप निराकार परम पिता परमात्मा शिव बाबा की अजर, अमर, अविनाशी सन्तान मै आत्मा अपने अनादि स्वरूप में सम्पूर्ण पावन,

सतोप्रधान अवस्था मे हूँ*। एक दिव्य प्रकाशमयी दुनिया जहां हजारों चंद्रमा से भी अधिक उज्ज्वल प्रकाश है उस निराकारी पवित्र प्रकाश की दुनिया की मैं रहने वाली हूँ। सर्व गुणों और सर्वशक्तियों से भरपूर हूँ।

➳ _ ➳ अपने इसी अनादि सतोप्रधान स्वरुप में मैं आत्मा परमधाम से अब नीचे आ जाती हूं। संपूर्ण सतोप्रधान देह धारण कर नई सतोप्रधान दुनिया में मैं प्रवेश करती हूं। संपूर्ण सतोप्रधान चोले में अवतरित देवकुल की सर्वश्रेष्ठ आत्मा के रुप में इस सृष्टि चक्र पर मेरा पार्ट आरंभ होता है। *अब मैं मन बुद्धि से देख रही हूँ अपने आदि स्वरूप में देव कुल की सर्वश्रेष्ठ आत्मा के रूप में स्वयं को सतयुगी दुनिया में*। 16 कला सम्पूर्ण, डबल सिरताज, पालनहार विष्णु के रूप में मैं स्वयं को स्पष्ट देख रही हूँ। लक्ष्मी नारायण की इस पुरी में डबल ताज पहने देवी देवता विचरण कर रहें हैं। *राजा हो या प्रजा सभी असीम सुख, शान्ति और सम्पन्नता से भरपूर हैं। चारों ओर ख़ुशी की शहनाइयाँ बज रही हैं। प्राकृतिक सौंदर्य भी अवर्णनीय है*।

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा अपने पूज्य स्वरूप का अनुभव कर रही हूं। मैं देख रही हूं मंदिरों में, शिवालयों में भक्त गण मेरी भव्य प्रतिमा स्थापन कर रहे हैं। *मेरी जड़ प्रतिमा से भी शांति, शक्ति और प्रेम की किरणे निकल रहीं हैं जो मेरे भक्तों को तृप्त कर रही हैं*। अपने पूज्य स्वरूप में मैं आत्मा स्वयं को कमल आसन पर विराजमान, शक्तियों से संपन्न अष्ट भुजाधारी दुर्गा के रूप में देख रही हूं। *असंख्य भक्त मेरे सामने भक्ति कर रहे हैं, मेरा गुणगान कर रहे हैं, तपस्या कर रहे हैं, मुझे पुकार रहे हैं, मेरा आवाहन कर रहे हैं। मैं उनकी सभी शुद्ध मनोकामनाएं पूर्ण कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ अब मैं देख रही हूँ स्वयं को अपने ब्राह्मण स्वरूप में। ब्राह्मण स्वरुप में स्थित होते ही अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में मैं खो जाती हूँ। संगम युग की सबसे बड़ी प्रालब्ध स्वयं भाग्यविधाता भगवान मेरा हो गया। विश्व की सर्व आत्माएँ जिसे पाने का प्रयत्न कर रही है उसने स्वयं आ कर मझे अपना बना लिया। *कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जिसे घर

बैठे भगवान मिल गए। मेरा यह दिव्य आलौकिक जन्म स्वयं परमपिता परमात्मा शिव बाबा के कमल मुख द्वारा हुआ है। स्वयं परमात्मा ने मुझे कोटों में से चुन कर अपना बनाया है*। अपने ब्राह्मण जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियों को देखते - देखते मुझे अपने ब्राह्मण जीवन के कर्तव्यों का भी ध्यान आने लगता है। उन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए अब मैं स्वयं को अपने फ़रिश्ता स्वरूप में स्थित करती हूँ।

➳ _ ➳ अब मैं डबल लाइट फरिश्ता बन गया हूँ। मेरे अंग - अंग से श्वेत रश्मियाँ निकल रही हैं। मेरे चारों ओर प्रकाश का एक शक्तिशाली औरा बनता जा रहा है। मेरे सिर के चारों ओर सफेद प्रकाश का एक बहुत सुंदर चमकदार क्राउन दिखाई दे रहा है। *ज्ञान और योग के चमकदार पंख मुझ फरिश्ते की सुंदरता को और अधिक निखार रहे हैं। सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप धारण किये, परमपिता का संदेशवाहक बन विश्व की सर्व आत्माओं को परमात्मा के इस धरा पर अवतरित होने का संदेश देने के लिए अब मैं सारे विश्व का भ्रमण कर रहा हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचरल नेचर बनाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सहज पुरुषार्थी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)

(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं विघ्न विनाशक आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव डबल लाइट रहती हूँ ।*
✺ *मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ आपकी हिम्मत और बाप की मदद। हिम्मत कम नहीं करना फिर देखो बाप की मदद मिलती है या नहीं। *सभी को अनुभव भी है कि हिम्मत रखने से बाप की मदद समय पर मिलती है और मिलनी ही है, गैरन्टी है। हिम्मत आपकी मदद बाप की।* तो संकल्प क्या हुआ? चेहरे देख रहे हैं - हिम्मत है या नहीं है! *हिम्मत वाले तो हो, क्योंकि अगर हिम्मत नहीं होती तो बाप के बनते नहीं। बन गये - इससे सिद्ध होता है कि हिम्मत है।* सिर्फ छोटी सी बात करते हो कि समय पर हिम्मत को थोड़ा सा भूल जाते हो। जब कुछ हो जाता है ना तो पीछे हिम्मत वा मदद याद आती है। *समय पर सब शक्तियां, समय प्रमाण यूज करना इसको कहा जाता है ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा।*

✺ *ड्रिल :- "समय प्रमाण सर्व शक्तियों को यूज कर ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा बनने का अनुभव"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा निर्भीक हूँ... मैं आत्मा शिवशक्ति दुर्गा हूँ... मैं आत्मा अष्ट शक्तिधारी दुर्गा हूँ...* मैं आत्मा इस साकारी तन से निकल कर... फरिश्ता रूप में स्थित होकर... उड़ कर पहुँच जाती हूँ फरिश्तों की दुनिया में... जहाँ चारों तरफ आदि रतन... एडवांस पार्टी के सारे फरिश्ते खड़े हैं... मैं छोटा सा फरिश्ता उनके बीच में खड़ा हूँ... सारे फरिश्ते मुझ आत्मा पर... अपनी शक्तिशाली वरदानी किरणें प्रवाहित कर रहे हैं... जिसमें मैं नहा रही हूँ... और सर्व शक्तियों से भरपूर हो रही हूँ... अब मैं फरिश्ता इन शक्तियों के साथ... वापस साकारी दुनिया में आ रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं इस साकारी दुनिया में... फरिश्ता रूप में विचरण कर रही हूँ... बाबा से प्राप्त सर्व शक्तियों और सारे ज्ञान को... स्व और विश्व कल्याण अर्थ उपयोग कर रही हूँ... *समय प्रमाण सर्व शक्तियों को यूज कर ज्ञानी तू आत्मा... योगी तू आत्मा बन गयी हूँ...* मैं आत्मा बाबा के दिए हुए ज्ञान को... आत्मसात कर हर परिस्थिति पर... हर विघ्न पर... *ज्ञानी तू आत्मा... योगी तू आत्मा बनकर... विजय प्राप्त करती हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा जब भी माया के जाल में फंस जाती हूँ... और माया रुस्तम होकर... परिस्थिति के रूप में सामने आकर खड़ी हो जाती है... तब मुझे बाबा के महावाक्य याद आ जाते हैं... *हिम्मते बच्चें तो मददे बाप... और मैं आत्मा माया पर विजय प्राप्त कर... पहाड़ जैसी समस्या को भी रूई बना कर उड़ा देती हूँ... बाबा ने कहा है बच्चे ज्ञान को धारण करना... माना समय प्रमाण उसको यूज करना...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा जब से सर्वशक्तिमान बाबा की संतान बनी हूँ... तब से ही मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिमान बन गयी हूँ... क्योंकि शेर का बच्चा शेर होता है... बाबा ने कहा है *बच्चे हिम्मत का एक कदम आपका... तो हजार कदम बाप के... तुम महावीर हो... ये विघ्न तुम्हें महावीर बनाने आये हैं*... अब जब भी कोई विघ्न आते हैं... मैं आत्मा बाबा के इन महावाक्य को याद कर... *अचल - अडोल बन जाती हूँ...* अब मैं आत्मा बाबा के कहे शब्द हमेशा

याद रखती हूँ... और कैसी भी परिस्थिति हो... कैसा भी विघ्न हो... बाबा के दिए हुए ज्ञान को समय के अनुसार ही यूज करती हूँ... ज्ञानी तू आत्मा... योगी तू आत्मा बन कर कर पार करती हूँ... *कभी भी अब मुझ आत्मा को ज्ञान की... विस्मृति नहीं होती है...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔